Question What is Varna? How is it different from caste?
वर्ण क्या है? यह जाति से किस प्रकार भिन्न है?

Answer आमतौर पर वर्ण और जाति का प्रयोग लोग एक ही अर्थ में करते हैं जो गलत है। क्योंकि वर्ण और जाति दोनों दो भिन्न अवधारणाएं हैं। शाब्दिक रूप से वर्ण के तीन अर्थ लगाये जाते हैं, जो इस प्रकार है-

(1) वर्ण शब्द वृ धातु से बना है जिसका अर्थ होता है वरण करना या चुनना। इस प्रकार अपने लिए व्यक्ति जो व्यवसाय चुनता है उसी के अनुरूप उसका वर्ण निर्धारित होता है। मतलब यह कि समान व्यवसाय वाले व्यक्तियों के समूह को वर्ण कहा जाता है।

(2) वर्ण का दूसरा अर्थ व्यक्ति की प्रकृति से है। इस दृष्टि से समान स्वभाव वाले व्यक्तियों से मिलकर वर्ण बनता है।

(3) तीसरा अर्थ रंग से लगाया गया है। सबसे पहले ऋग्वेद में इस शब्द का प्रयोग रंग अर्थात् काले एवं गोरे रंग की जनता के लिए किया गया है।

परन्तु शाब्दिक अर्थ के आधार पर वर्ण को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। वर्ण व्यक्ति के गुण एवं कर्म से सम्बन्धित है। समान गुण एवं कर्म वाले व्यक्ति एक ही वर्ण के माने जाते हैं। इसकी चर्चा गीता में हुई है। श्री कृष्ण ने कहा है कि "चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः"। इसका अर्थ है कि मैंने ही गुण तथा कर्म के आधार पर चार वर्णों की रचना की है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वर्ण व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण की एक ऐसी व्यवस्था है जो व्यक्ति के गुण यह स्पष्ट है कि वर्ण व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण की एक ऐसी व्यवस्था है जो ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति के गुण और कर्म पर आधारित है। इसके अन्तर्गत चार वर्णों के रूप में समाज का कार्यभेद ~~किया~~ विभाजन हुआ है।

परन्तु जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित है। यह अपने सदस्यों पर भोजन, विवाह, पेशा और सामाजिक सहवास सम्बन्धी अनेक प्रतिबन्ध लगाती है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वर्ण और जाति दोनों हैं भिन्न अवधारणाएँ है इसलिए दोनों

के बीच अनेक अन्तर पाये जाते हैं जो निम्नलिखित हैं –

वर्ण – वर्ण के निम्नलिखित अंतर हैं जो इस प्रकार है –

1. वर्ण गुण तथा कर्म पर आधारित है। इसलिए इसकी सदस्यता गुण एवं कर्म के आधार पर मिलती है।

(2) वर्णों की संख्या कम है। क्योंकि ~~इसकी~~ ~~~~ वैदिक शास्त्रों में केवल चार वर्णों का उल्लेख है।

(3) वर्ण में खान – पान पर प्रतिबन्ध नहीं होता है।

(4) वर्ण एक बहिर्विवाही समूह है।

(5) वर्ण व्यवस्था वैदिक काल से प्रचलित है। इसलिए यह अपेक्षाकृत प्राचीन व्यवस्था है।

(6) वर्ण व्यवस्था में ऊँच – नीच का भेद – भाव नहीं पाया जाता है।

(7) वर्ण का आधार कर्म और गुण है। अतः इसे बदलना संभव है।

(8) वर्ण व्यवस्था कर्तव्यों की व्याख्या करती है।

जाति – जाति के निम्नलिखित अंतर है जो इस प्रकार है –

(1) जाति जन्म पर आधारित है। इसलिए इसकी सदस्यता व्यक्ति को जन्म से प्राप्त होती है।

(2) जाति की संख्या अधिक है।

(3) जाति में खान – पान पर कठोर प्रतिबन्ध पाया जाता है।

(4.) जाति व्यवस्था के अन्तर्गत विवाह पर प्रतिबन्ध पाया जाता है। व्यक्ति अपनी ही जाति या उपजाति में विवाह करता है। इसी कारण जाति अन्तर्विवाही है।

(5) जाति की उत्पत्ति जैन एवं बौद्ध धर्म के पतन के बाद मानी जाती है इसलिए यह अपेक्षाकृत नयी व्यवस्था है।

(6) जाति व्यवस्था में उच्च कर्म और निम्न कर्म के आधार पर विभिन्न जातियाँ उच्च और नीची मानी जाती है।

(7) जाति जन्म से निर्धारित होने के कारण कठोर है। इसे बदला नही जा सकता।

(8) जाति व्यवस्था खान-पान विवाह सामाजिक सहवास एवं पेशा सम्बन्धी निषेधों की व्यवस्था करती है।

उपरोक्त व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि वर्ण तथा जाति में कुछ मूलभूत अन्तर पाये जाते है।

DR Vijay Kumar Mehta
Dptt of Sociology
Date - 18-06-2021